✺ 10 अगस्त 2014 (3-12-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] आप सब विश्व कल्याणकारी, विश्व परिवर्तक हो। विश्व कल्याणकारी संगठन विश्व को अपनी वृत्ति वा वायब्रेशन द्वारा वा अपने स्मृति स्वरूप के समर्थी द्वारा कैसे सेवा करते हैं– उसकी चेकिंग करने बहुत आयेंगे। आज की साइंस द्वारा साइलेन्स शक्ति का नाम बाला होगा। योग द्वारा शक्तियाँ कौन सी और कहाँ तक फैलती हैं, उनकी विधि और गति क्या होती है, यह सब प्रत्यक्ष दिखाई देंगे।

2] चैलेन्ज और प्रैक्टिकल समान होना चाहिए। नहीं तो चैलेन्ज और प्रैक्टिकल में महान अन्तर होने से सेवाधारी के बजाए क्या टाइटिल मिल जायेगा? ऐसे करने वाली आत्मायें अनेक आत्माओं को वन्चित करने के निमित्त बन जाती, पुण्य आत्मा के बजाए बोझ वाली आत्माएं बन जाती हैं- इस पाप और पुण्य की गहन गति को जानो।

3] पाप की गति श्रेष्ठ भाग्य से वन्चित कर देती है। संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्षफल प्राप्त होता है। संकल्प में स्वयं की कमजोरी, किसी भी विकार की- पाप के खाते में जमा होती ही है। लेकिन अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है, किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ऐसे ही कर्म अर्थात् सम्बन्ध और सम्पर्क द्वारा किसी के प्रति शुभ भावना के बजाए और कोई भी भावना है तो यह भी पाप का खाता जमा होता है क्योंकि यह भी दु:ख देना है। शुभ भावना पुण्य का खाता बढ़ाती है। व्यर्थ भावना, घृणा की भावना वा ईष्या की भावना पाप का खाता बढ़ाती है इसलिए बाप के बच्चे बने, वर्से के अधिकारी बने अर्थात् पुण्य आत्मा बने, यह निश्चय, यह नशा तो बहुत अच्छा।

4] सदा भाव और भावना श्रेष्ठ रखो तो सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे। स्वयं का परिवर्तन ही अन्य का परिवर्तन है। इसमें पहले मैं, ऐसा सोचो- इस मरजीवा बनने में ही मज़ा है, इसी को ही महाबली कहा जाता है।

5] सदा इस नशे में रहो कि हमको जो मिला वह किसी को मिल नहीं सकता। अभी यह प्रेज़ीडेन्ट चाहे तो स्वर्ग में आयेगा? जब तक बाप का न बने तब तक स्वर्ग में नही आ सकते। यहीं रह जायेंगे। हम स्वर्ग में जायेंगे, ऐसा नशा और खुशी रहे- हम विश्व के मालिक के बालक हैं।

✺ योग-

1] ज्ञान बल और योग बल सबसे श्रेष्ठ बल है। जैसे साइन्स का बल अंधकार पर विजय प्राप्त कर रोशनी कर देता है। ऐसे योगबल सदा के लिए माया पर जीत प्राप्त कर विजयी बना देता है। योगबल इतना श्रेष्ठ बल है तो माया की शक्ति इसके आगे कुछ भी नहीं है। योगबल वाली आत्मायें स्वप्न में भी माया से हार नहीं खा सकती। स्वप्न में भी कोई कमजोरी आ नहीं सकती। ऐसा विजय का तिलक आपके मस्तक पर लगा हुआ है।

✺ धारणा-

1] सेकेण्ड के इशारे से एकरस स्थिति में स्थित हो जाओ।

2] समय प्रमाण अब व्यर्थ की बातों को छोड़ समर्थी स्वरूप बनो। ऐसे विश्व सेवाधारी बनो। इतना बड़ा कार्य जिसके लिए निमित्त बने हुए हो उसको स्मृति में रखो।

...2

3] बाप के बनने के बाद प्राप्ति अनगिनत है लेकिन पुण्य आत्मा के साथ पाप का बोझा भी सौ गुना के हिसाब से है इसलिए इतने अलबेले भी मत बनना। बाप को जाना और वर्से को जाना, ब्रह्माकुमार, कुमारी कहलाया- इसलिए अब तो पुण्य ही पुण्य है, पाप तो खत्म हो गया वा सम्पूर्ण बय गये, ऐसी बात नहीं सोचना। ब्राह्मण जीवन के नियमों को भी ध्यान में रखो। मर्यादायें सदा सामने रखो। पुण्य और पाप दोनों का ज्ञान बुद्धि में रखो। चेक करो पुण्य आत्मा कहलाते हुए मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई पाप तो नहीं किया? कौन सा खाता जमा किया? किसी भी प्रकार की चलन द्वारा बाप वा नॉलेज का नाम बदनाम तो नहीं किया? बाप के पास तो हरेक का खाता स्पष्ट है लेकिन स्वयं के आगे भी स्पष्ट करो। अपने आपको चलाओ मत अर्थात् धोखा मत दो- यह तो होता ही है, यह तो सबमें है। भल सबमें हो लेकिन मैं सेफ हूँ- ऐसी शुभकामना रखो तब विश्व सेवाधारी बन सकेंगे। संगठित रूप में एकमत एकरस स्थिति का अनुभव करा सकेंगे। अब तक भी पाप का खाता जमा होगा तो चुक्तू कब करेंगे? अन्य आत्माओं को पुण्य आत्मा बनाने के निमित्त कैसे बनेंगे? इसलिए अलबेलेपन में भी पाप का खाता बनाना बन्द करो। सदा पुण्य आत्मा भव का वरदान लो।

4] मुश्किल तब लगता है जब बाप के साथ को भूल जाते हो- बाप को साथी बनाकर मुश्किल को सहज कर सकते हो। अकेले होने से बोझ अनुभव करते हो। तो ऐसे साथी बनाकर मुश्किल को सहज बनाओ।

5] जो कर्म मैं करूँगा मुझे देख सब करेंगे ऐसा अटेन्शन हर कर्म पर रखना यही विशेष आत्माओं का कर्तव्य है। हर कर्म ऐसा हो जो सभी देखकर **'वन्स मोर'** करें।

6] नम्बरवन में आना है तो व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर दो।

✺ सेवा-

1] खुशी का चेहरा चलता-फिरता चैतन्य आकर्षित करने वाला बोर्ड है। **जहाँ जायेगा बाप का परिचय देगा।** खुशी का चेहरा देखेंगे तो बनाने वाले की याद जरूर आयेगी। जब एक बोर्ड इतनों को परिचय देता, आप इतने चैतन्य बोर्ड कितनों को परिचय देते होंगे? इतने आकर्षण करने वाले बोर्ड तैयार हो जाएं तो और भी जगह बड़ी करनी पड़ेगी।